तुळजाराम चतुरचंद महावद्यालय, बारामती

(कला, वज्ञान व वाणज्य)

(स्वायत्त)

राष्ट्रीय उच्चतर शक्षा अभयान (रुसा) के अंतर्गत

* हिंदी वभाग *

* एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब-संगोष्ठी *

'आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष' के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय उच्चतर शक्षा अभयान (रुसा) के अंतर्गत दिनांक 25 के वरिष्ठ साहित्यकार श्रद्धेय डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी उपस्थित थे । संगोष्ठी के वषय का पर अपने में उन्होंने कहा क, आज़ादी के समय प्रेम, सदभाव और सहयोग जैसे मूल्य थे । व वधता में एकता थी, उस तरह तरह प्रेम, सदभाव और सह अस्तित्व की भावना थी । यह भावना देश के वभाजन के साथ ही टूट गई । इन 75 वर्षों में वे मूल्य ध्वंस हो गए । धर्म के स्थान पर साम्प्रदायिकता बढ़ती गई । ले कन संवधान ने हमें एक सूत्र मे बांधा है । सं वधान ने धर्म, जाति, धर्म, वर्ण व्यवस्था ख़त्म कर समता प्रस्था पत करने का कार्य कया। फर भी आज समाज में यह पूरी तरह से ख़त्म नहीं हुए । स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में इन सभी का चत्रण साहित्यकारों ने कया । आज स्त्रीवादी साहित्य, द लत साहित्य, आदिवासी साहित्य, कन्नर साहित्य जैसे साहित्य का निर्माण अपने अस्तित्वबोध के कारण हुआ है । आज इस प्रकार का अस्तित्ववादी साहित्य का होना यह बहुत बड़ी उपलब्धि है । साहित्य की अनेक रचनाओं में समाज में फैले भ्रष्टाचार, जातीयता और समाज की वास्तवकता का चत्रण साहित्यकारों ने अपने साहित्य में कया है ।" इस तरह उन्होंने साहित्य और समाज के बदलते परिवेश को स्पष्ट कया । इस उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष के रूप में महावद्यालय के प्रधानाचार्य, डॉ. चंद्रशेखर मुरूमकर थे । उन्होंने अपने अध्यक्षीय मंतव्य में संगोष्ठी की सफलता हेतु शुभकामनायें देते हुए वर्त्तमान समय में समाज के बदलते परवेश के साथ-साथ साहित्य की व वध प्रवृतियों पर प्रकाश डाला । इस उद्घाटन सत्र के बाद तुरंत ही प्रथम सत्र का प्रारंभ हुआ ।

प्रथम सत्र की वषय प्रस्तोता, हैदराबाद से प्रोफेसर टी. जे. रेखा रानी जी ने कथासाहित्य में बदलता परिवेश इस वषय पर अपने मंतव्य देते हुए कहा क साहित्य और समाज एक दूसरे पर आ श्रत होते हैं । साहित्यकार को समाज का यथार्थ चत्रण करना चाहिए । पर्यावरण, बेरोजगारी, कोरोना की महामारी जैसी जैसी अनेक समस्याएं निर्माण हुई । औद्योगकता के कारण गाँवों में भी आर्थक समस्याएं बढ़ गई । वश्ववद्यालय के हिंदी वभागाध्यक्ष प्रो. दत्तात्रय मुरूमकर जी ने कथासाहित्य में बदलते परिवेश पर वस्तार से वचार प्रकट कये । अपने वषय को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने अनेक उपन्यास तथा कहानियों का संदर्भ देते हुए समाज की वास्तवकता पर प्रकाश डाला । उदारीकरण, निजीकरण के दौर में वर्तमान समय में शक्षा का भी निजीकरण हो रहा है । स्त्री वमर्श, द लत वमर्श, आदिवासी वमर्श आदि वमर्श प्रमा णकता के साथ लख रहें हैं। इस तरह उन्होंने अपने वषय को वस्तार से ववेचन कया ।

द्वतीय सत्र का प्रारम्भ दोपहर दो बजे हुआ। इस सत्र की वषय प्रस्तोता, केरल से डॉ. पूर्णमा निबंध, आत्मकथा, आलोचना, कवता आदि वधाओं में चत्रित बदलते परिवेश को ववेचत कया। निबंध के बदलते वषय स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा क हिंदी निबंध साहित्य समाज की पुनर्रचना करता है। निबंधकारों ने में समसामयिक चत्रण कया है। आलोचना पर ववेचन करते हुए कहा क वैश्विक चंतन से जुड़ने का प्रयास आलोचनात्मक पुस्तकों में हुआ वह प्रशंसनीय है। 75 वर्षों में आज भी दहेज़, भ्रूणहत्या, स्त्री शक्षा, स्त्रियों की नौकरी की समस्या दिखाई देती हैं। इस प्रकार कथेत्तर साहित्य में समसामयिक चत्रण तथा ववध समस्या पर आपने का चंतनपरक वचार को प्रस्तुत कये। इस सत्र के प्रमुख वक्ता सावत्रीबाई फुले पुणे वश्ववद्यालय के के हिंदी वभागाध्यक्ष प्रो. वजयकुमार रोड़े जी ने कथेत्तर साहित्य में बदलते परिवेश पर वस्तार से वचार प्रकट प्रकट करते हुए कहा क कथा साहित्य जितना ही कथेत्तर साहित्य भी महत्वपूर्ण है। कथेत्तर साहित्य कल्पना को नहीं बल्कि वास्तवकता को लेकर चलता है। रचनाकार के पास वस्तुनिष्ठता होनी चाहिए, धर्म, इतिहास का भी ज्ञान होना चाहिए। यह साहित्य समाज को ऊर्जा प्रदान करता है। इन 75 वर्षों में बदलते हुए भारत का चत्र, धर्म तथा राजनीति का चत्र इस कथेतर साहित्यकारों ने लखने की को शश की है। इस तरह उन्होंने अपने वषय को गहनता से ववेचत कया।

इस वेब संगोष्ठी को सफल बनाने के लए भारत के वभन्न राज्यों महाराष्ट्र, गोवा, दिल्ली, बिहार, कर्नाटक, केरल, छत्तीसगढ़, चेन्नई, तेलंगना, हरियाणा आदि से वद्वतजन अध्यापक, समीक्षक, शोधार्थी तथा व भन्न महा वद्यालय के छात्र सभी मलकर कुल 170 प्रतिभा गयों ने सहभाग दर्शाया। इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में उपस्थित सभी महानुभाव, अध्यक्ष एवं प्रतिभा गयों का स्वागत एवं प्रस्तावक हिंदी वभाग के अध्यक्ष डॉ.प्रदीप सरवदे जी ने कया। उद्घाटन सत्र का आभार ज्ञापन प्रा. ईश्वर सांगळे जी ने कया। इस का सूत्रसंचालन डॉ.प्रतिभा जावळे तथा एम. ए. द्वतीय वर्ष की छात्रा कु. सानिका करकरे जी ने कया। इस वेब संगोष्टी के समापन सत्र का आभार ज्ञापन हिंदी वभागाध्यक्ष. डॉ. प्रदीप सरवदे जी ने कया। इस संगोष्ठी को के समन्वयक एवं उपप्राचार्य, डॉ. अजित तेलवे, वभन्न वभागों के अध्यापक गण, हिंदी वभाग के सभी सहयोगी अध्यापक तथा कम्पुटर वभाग के अध्यक्ष प्रा. उपेन्द्र चौधरी, उनके सहयोगी प्रा. कापसे, प्रा. दीक्षत, प्रा. वशाल शहा, प्रा. कुलकर्णी मैडम आदि सभी ने सहयोग दिया। इस तरह यह एक दिवसीय राष्ट्रीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी बडे उत्साह तथा सफलता के साथ संपन्न हुई।

डॉ. प्रदीप सरवदे